SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारत के आर्थिक विकास में आत्मनिर्भर भारत अभियान की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अराधना दुबे, वाणिज्य विभाग
शासकीय सी.एल.सी. महाविद्यालय, पाटन, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
अराधना दुबे
E-mail : aradhanadubeyy23@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/12/2025
Revised on : 25/02/2026
Accepted on : 06/03/2026
Overall Similarity : 00% on 26/02/2026

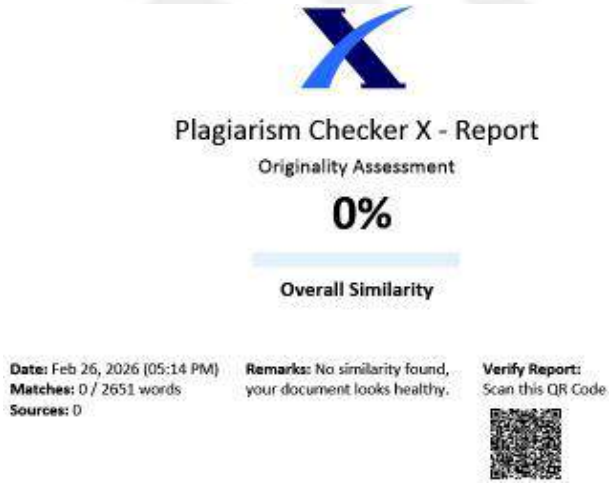

शोध सार

किसी देश के आर्थिक विकास के पैमानें में सकल घरेलू उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय, घटता हुआ व्यापार घाटा, स्वरोजगार एवं देश में निर्मित प्रतिस्पर्धात्मक उत्पादों एवं सेवाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं। भारतीय पारंम्परिक उत्पादों एवं सेवाओं को देश एवं देश की सीमाओं के बाहर उपभोग योग्य बनाने एवं उचित बाजार वातावरण प्रदान करने हेतु आत्मनिर्भर भारत अभियान जारी हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान देश के सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ाने, देश में तकनीकि विकास एवं विस्तार करने, स्थानीय उत्पादों का विस्तार करने तथा समाज में रोजगार प्राप्त करने के स्थान पर स्वरोजगार तथा उद्यमिता का विकास करने में महत्वपूर्ण साबित हुई हैं। अध्ययन के आंकड़े आर्थिक विकास के विभिन्न घटकों में आत्मनिर्भर भारत अभियान की सार्थकता को सिद्ध करते हैं।

मुख्य शब्द

आत्मनिर्भरता, आर्थिक विकास, जीडीपी, एमएसएमई, एनपीए.

प्रस्तावना

'आत्मनिर्भर भारत अभियान' देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा 12 मई 2020 को प्रारंभ करने की घोषणा की गई। आत्मनिर्भर भारत अभियान तथा कोविड–19 का आपस में अत्यंत गहरा संबध हैं। कोविड–19 जैसी महामारी की शुरूवात चीन देश में एक स्थानीय बीमारी के रूप हुई। इस महामारी ने एक गंभीर वायरस के रूप में संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया। इस वायरस का प्रभाव न केवल स्वास्थ्य तक सीमित था अपितु वैश्विक, सामाजिक तथा आर्थिक स्तर पर भी इसका प्रभाव देखा गया। इन स्थितियों से अन्य

देशों की भांति भारत भी प्रभावित हुआ तथा लॉकडाउन लगने से देश की अर्थव्यवस्था अस्त–व्यस्त हो गई जिसका मुख्य कारण भारत का चीन तथा अन्य देशों पर आवश्यक उत्पादों हेतु निर्भरता का होना था। इन समस्याओं को देखते हुए तथा इनके समाधान के प्रयास हेतु तात्कालिक प्रधानमंत्री द्वारा आयात संबंधी निर्भरता को कम करने के लिए तथा स्वदेशी अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए इस योजना को प्रारंभ किया गया।

आत्मनिर्भर भारत अभियान

आत्मनिर्भर भारत अभियान मुख्य रूप से भारत को आत्मनिर्भर तथा सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य घरेलू उत्पादन में वृद्धि तथा रोजगार के नये अवसरों का सृजन कर देश को वैश्विक स्तर पर स्वतंत्र एवं मजबूत बनाना हैं।

तालिका क्रमांक 1: आत्मनिर्भर भारत अभियान के क्षेत्र एवं प्रमुख स्तंभ

क्र.	आत्मनिर्भर भारत अभियान के क्षेत्र	आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रमुख स्तंभ
1.	सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग	जनसंख्या
2.	कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र	भौतिक अवसंरचना
3.	स्वास्थ्य एवं शिक्षा	प्राद्यौगिकी
4.	डिजिटल एवं तकनिकी क्षेत्र	वित्त
5.	स्टार्टअप एवं नवाचार	उत्पादन एवं विनिर्माण
6.	मेक–इन–इंडिया और आयात प्रतिस्थापन	नीति और प्रशासन
7.	आधारभूत संरचना एवं ऊर्जा	

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

Sumukhi Rathore (2023) ने अपने शोध अध्ययन "ATMANIRBHAR BHARAT -AN ANALYTICAL STUDY" में यह निष्कर्ष निकाला कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्र जैसे घरेलू विनिर्माण, स्थानीय व्यवसाय, रोजगार तथा कृषि क्षेत्र में तेजी से सुधार हुआ हैं। इस अभियान के समक्ष अनेक चुनौतियां भी हैं, किन्तु नवाचार, अनुसंधान, समाज की भागीदारी, तथा बुनियादी ढांचे में सुधार करने जैसे कार्यों के माध्यम से इस अभियान के द्वारा देश को अधिक समृद्ध तथा आत्मनिर्भर बनाया जा सकता हैं।

Anjali Khandelwal (2022) ने अपने शोध अध्ययन "Atmanirbhar Bharat Abhiyaan- a move towards advancement of MSMEs" में यह निष्कर्ष निकाला कि इस अभियान के तहत सरकार द्वारा विनियोग तथा विक्रय के संबंध में डैडम में अनेक परिवर्तन किये ताकि डैडम अपने कार्यक्षेत्र को बढ़ा सके। इस अभियान के माध्यम से MSME की सफलता के तीन महत्वपूर्ण पहलू के रूप में कुशल मजदूरों की उपलब्धता, वित्तीय स्थिरता, तथा MSME द्वारा उत्पादित वस्तुओं की बाजार में टिके रहने की क्षमता को महत्वपूर्ण मानकर इस क्षेत्र पर ध्यान देने का प्रयास किया गया हैं।

शोध उद्देश्य

उक्त शोध निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित हैं:

1. उद्योग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (MSME), कृषि एवं स्टार्टअप के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. रोजगार सृजन, एवं स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने में आत्मनिर्भर भारत अभियान की प्रभावशीलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
3. आत्मनिर्भर भारत अभियान के समक्ष विद्यमान चुनौतियों एवं सीमाओं की पहचान कर, अभियान को अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पना

1. H_0 शोध अवधि के दौरान आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से भारत के रोजगार दर में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ हैं।

   H_1 शोध अवधि के दौरान आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से भारत के रोजगार दर में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ हैं।

2. H_0 आत्मनिर्भर भारत अभियान के परिणाम स्वरूप सकल घरेलू उत्पादन में MSME के योगदान में वृद्धि नहीं हुई हैं।

   H_1 आत्मनिर्भर भारत अभियान के परिणाम स्वरूप सकल घरेलू उत्पादन में MSME के योगदान में वृद्धि हुई हैं।

शोध प्रविधि

आंकड़ों का संग्रहणः उक्त शोध कार्य पूर्ण रूप से द्वितीयक समंकों पर आधारित हैं। शोध कार्य में प्रयुक्त द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण विभिन्न शासकीय स्त्रोंतों के माध्यम से किया गया हैं।

शोध अवधिः उक्त शोध कार्य की अवधि को दो हिस्सों में विभाजित कर पूर्ण किया गया हैं। पहले हिस्सें में आत्मनिर्भर भारत अभियान प्रारंभ होने के पूर्व के चार वर्षो को लिया गया हैं तथा दूसरे हिस्सें में अभियान प्रारंभ होने के बाद के चार वर्षों को लिया गया हैं। इस प्रकार उक्त शोध कार्य वित्तीय वर्ष 2016–17 से वित्तीय वर्ष 2023–24 तक कुल आठ वर्षों की अवधि पर आधारित हैं।

शोध तकनीकः उक्त शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु विभिन्न शासकीय स्त्रोंतों से प्राप्त अव्यवस्थित आंकडों को सारणीकृत कर औसत विधि, प्रतिशत विधि, तथा विभिन्न सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग कर विश्लेषण कार्य किया गया हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण

तालिका क्रमांक 2: भारत देश की कुल GDP संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण वित्तीय वर्ष 2016–17 से 2023–24 तक

(राशिः Nominal trillion USD में)

वर्ष (अभियान के पूर्व)	GDP (nominal trillion USD)	वार्षिक वृद्धि दर	वर्ष (अभियान के बाद)	GDP (nominal trillion USD)	वार्षिक वृद्धि दर
2016-17	2.29	9.047	2020-21	2.67	-6
2017-18	2.65	15.72	2021-22	3.17	18.73
2018-19	2.7	1.89	2022-23	3.35	5.68
2019-20	2.84	5.19	2023-24	3.91	16.72
औसत	2.62	7.96	-	3.275	13.71

*(**स्त्रोंतः** अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष के वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक आंकड़ें)*

उक्त तालिका से स्पष्ट हैं अभियान प्रारंभ होने के पूर्व के चार वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 तक की अवधि में देश की जीडीपी का औसत 2.62 (राशि trillion USD में) हैं तथा अभियान प्रारंभ होने के बाद के चार वित्तीय वर्ष 2020–21 से वर्ष 2023–24 की अवधि में देश की जीडीपी का औसत 3.275 (राशि trillion USD में) हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रारंभ होने से देश की जीडीपी में होने वाली वृद्धि को इन आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं।

रेखाचित्र क्रमांक 1: भारत देश की कुल GDP वित्तीय वर्ष 2016–17 से 2023–24 तक

*(**स्त्रोंत**: अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष के वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक आंकड़ें)*

तालिका क्रमांक 3: देश का कुल आयात एवं निर्यात वित्तीय वर्ष 2016–17 से 2023–24 तक

(राशि: USD Billion में)

वर्ष	निर्यात	निर्यात में वृद्धि या कमी प्रतिशत में	आयात	आयात में वृद्धि या कमी प्रतिशत में
2016-17	440.05	-	480.21	-
2017-18	498.62	13.31	583.11	21.43
2018-19	538.08	7.91	640.14	9.78
2019-20	526.55	-2.14	602.98	-5.8
2020-21	497.90	-5.44	511.96	-15.09
2021-22	676.53	35.88	760.06	48.46
2022-23	776.40	14.76	898.01	18.15
2023-24	778.21	0.23	853.77	-4.93

*(**स्त्रोंत**: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट)*

उक्त तालिका में वित्तीय वर्ष 2016–17 से वित्तीय वर्ष 2023–24 तक के देश के कुल आयात तथा निर्यात का विश्लेषण किया गया हैं। तालिका से स्पष्ट हैं अभियान प्रारंभ होने के पूर्व के चार वित्तीय वर्षों में देश में कुल 2003.3 USD Billion का निर्यात किया गया हैं तथा अभियान प्रारंभ होने के बाद के चार वित्तीय वर्षों में कुल 2729. 04 USD Billion का निर्यात किया गया हैं। निर्यात में होने वाली यह बढ़ोत्तरी आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रभावों को स्पष्ट करता हैं। उक्त तालिका में आयात में होने वाली वृद्धि को भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं।

रेखाचित्र क्रमांक 2: देश का कुल आयात एवं निर्यात वित्तीय वर्ष 2016–17 से 2023–24 तक

*(**स्त्रोंत**: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट)*

तालिका क्रमांक 4: भारत देश की बेरोजगारी दर, स्टार्टअप पंजीयन, तथा एमएसएमई संबंधी आंकड़ों का विश्लेषणात्मक अध्ययन वित्तीय वर्ष 2016–17 से 2023–24 तक

वर्ष	स्टार्टअप पंजीयन की संख्या	बेरोजगारी दर प्रतिशत में	MSME क्रेडिट(लाख करोड़ में)	MSME सकल एनपीए (राशि लाख करोड़ में)	MSME का जीडीपी में योगदान प्रतिशत में
2016-17	300	3.9	10.3	-	28.0
2017-18	7966	6.0	11.2	1.63	28.5
2018-19	8625	5.8	13.5	1.61	28.7
2019-20	13139	4.8	16.6	1.72	29.0
2020-21	16342	4.2	18.2	1.82	29.2
2021-22	21361	4.1	19.9	1.17	29.5
2022-23	29688	3.2	21.8	1.31	29.8
2023-24	34200	3.2	23.5	1.25	30.0

(स्त्रोंतः विभिन्न सरकारी स्त्रोंतों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण)

उक्त तालिका के माध्यम से वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2023–24 तक के अवधि में देश के कुल स्टार्टअप व्यवसाय की संख्या, बेरोजगारी दर, MSME क्रेडिट, MSME सकल एनपीए तथा MSME का जीडीपी में योगदान को आसानी से समझा जा सकता हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान प्रारंभ होने के बाद देश में स्टार्टअप की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई हैं। वित्तीय वर्ष 2016–17 तक देश में कुल 300 स्टार्टअप व्यवसाय पंजीकृत थे अभियान प्रारंभ होने के पश्चात् वित्तीय वर्ष 2023–24 तक स्टार्टअप व्यवसाय 34200 तक पंजीकृत हो गये। देश की बेरोजगारी दर में भी अभियान प्रारंभ होने के बाद भारी गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई। अभियान प्रारंभ होने के पूर्व चार वित्तीय वर्षों में बेरोजगारी दर का औसत 5.125 प्रतिशत था जो अभियान प्रारंभ होने के बाद के चार वित्तीय वर्षों में 3.675 प्रतिशत हो गया। डैडम् क्रेडिट अभियान प्रारंभ होने के पूर्व चार वित्तीय वर्षों में कुल 51.6 लाख करोड़ रूपये था जबकि वित्तीय वर्ष 2021–21 से वर्ष 2023–24 तक MSME क्रेडिट कुल 83.4 लाख करोड़ हो गया। MSME सकल एनपीए का अध्ययन करने से स्पष्ट हैं कि वित्तीय वर्ष 2017–18 में सकल एनपीए 1.63 लाख करोड़ रूपयें का था जो वित्तीय वर्ष 2023–24 तक 1.25 लाख करोड़ हो गया। उक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि वित्तीय वर्ष 2016–17 में MSME का जीडीपी में योगदान 28 प्रतिशत था जो कि वित्तीय वर्ष 2023–24 तक बढ़ते हुए 30 प्रतिशत हो गया।

तालिका क्रमांक 5: भारत देश में रोजगार संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2023–24 तक

(राशि करोड़ में)

वर्ष	रोजगार (अभियान के पूर्व)	रोजगार वद्धि / कमी प्रतिशत मे	वर्ष	रोजगार (अभियान के बाद)	रोजगार वद्धि / कमी प्रतिशत में
2016-17	47.5	-	2020-21	50.5	1.00
2017-18	48.3	1.68	2021-22	52.0	2.97
2018-19	49.2	1.87	2022-23	57.0	9.62
2019-20	50.0	1.63	2023-24	64.3	6.00
औसत	48.75			55.95	

(स्त्रोंतः विभिन्न सरकारी स्त्रोंतों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण)

उक्त तालिका के माध्यम से देश में रोजगार से संबंधित आंकड़ों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता हैं अभियान प्रारंभ होने के पूर्व के चार वित्तीय वर्ष अर्थात् वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 तक देश में रोजगार का औसत 48.75 करोड़ था जो कि अभियान प्रारंभ होने के बाद के चार वित्तीय वर्ष अर्थात् वर्ष 2020–21 से वर्ष 2023–24

तक औसतन 55.95 करोड़ हो गया तथा रोजगार में होने वाली वृद्धि को भी प्रतिशत के रूप में तालिका के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता हैं।

रेखाचित्र क्रमांक 3: भारत देश में रोजगार संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2023–24 तक

*(**स्त्रोंतः** विभिन्न सरकारी स्त्रोंतों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण)*

परिकल्पना का परीक्षण

1. वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2023–24 तक जो कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रारंभ होने के पूर्व एवं बाद के चार वित्तीय वर्षों के रूप में शोध अवधि हेतु चयन किया गया हैं, देश में इस अवधि के रोजगार संबंधी आंकड़ों के काई वर्ग का मान 2.28 हैं और 5 प्रतिशत सार्थकता के स्तर पर स्वतंत्र संख्या 6 का सारणिक मान 1. 94 हैं जो गणना किये हुए मान से कम हैं (2.28 > 1.94)। अतः हमारी प्रथम वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत होती हैं कि शोध अवधि के दौरान आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से भारत के रोजगार दर में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ हैं।
2. आत्मनिर्भर भारत अभियान के प्रारंभ होने के पूर्व एवं बाद के चार वित्तीय वर्षों के MSME के सकल घरेलू उत्पादन में योगदान संबंधी आंकड़ों के काई वर्ग का मान 3.86 हैं और 5 प्रतिशत सार्थकता के स्तर पर स्वतंत्र संख्या 6 का सारणिक मान 1.94 हैं जो गणना किये हुए मान से कम हैं (3.86 > 1.94)। अतः हमारी दूसरी वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत होती हैं कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के परिणाम स्वरूप सकल घरेलू उत्पादन में MSME के योगदान में वृद्धि हुई हैं।

शोध का महत्व

इस शोध अध्ययन के माध्यम से देश में रोजगार सृजन, उत्पादन व्यवस्था तथा वैश्विक स्तर पर देश की स्थिति के संबंध में आत्म निर्भर भारत अभियान की भूमिका स्पष्ट होगी। उक्त शोध अध्ययन MSME, स्टार्टअप, जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अभियान के प्रभावों का अध्ययन कर देश में सरकारी नीतियों का अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी प्रदान करेगा। साथ ही इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर भविष्य में नीति निर्माण के लिए आर्थिक योजनाओं एवं सुधार कार्यक्रमों के निर्माण में मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

निष्कर्ष

शोध अवधि में अभियान के परिणामस्वरूप एमएसएमई क्रेडिट में लगातार वृद्धि तथा एमएसएमई एनपीए में लगातार गिरावट की प्रवृत्ति पाई हैं। अभियान का प्रभाव स्टार्टअप के क्षेत्र में भी देखने को मिला और स्टार्टअप पंजीयन की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई हैं। अभियान के परिणामस्वरूप देश के भीतर रोजगार सृजन में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप बेरोजगारी दर में कमी हुई हैं। स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस अभियान के तहत उत्पादन को विशेष ध्यान दिया गया जिसके परिणाम देश के सकल घरेलू उत्पादन में निरंतर वृद्धि की प्रवृत्ति पाई गयी। उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप निर्यात में भी लगातार वृद्धि हुई हैं। साथ ही आयात में भी वृद्धि की प्रवृत्ति पाई गयी जिसका मुख्य कारण भारत देश का ऊर्जा आवश्यकताओं पर निर्भरता का होना हैं तथा घरेलू

उत्पादन बढ़ने से आवश्यक इनपुट की आवश्यकता भी बढ़ती हैं जिसमे मुख्य रूप मशीनरी तथा इलेक्ट्रानिक चिप्स आदि शामिल हैं इन सारे इनपुट उपकरण के लिए भारत को आयात करना पड़ता हैं। आयात बढ़ने का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी हैं क्योंकि आत्मनिर्भरता का अर्थ आयात का तुरंत ही समाप्त हो जाना नहीं होता हैं क्योंकि अभियान के प्रारंभिक चरण में देश में उत्पादन के बढ़ने से आयात में भी वृद्धि हुई हैं। उक्त अभियान के माध्यम से विकसित भारत योजना 2047 के आयात प्रतिस्थापन से संबंधित चुनौतियों का समाधान किया जा सकेगा।

अभियान की चुनौतियां

आत्मनिर्भर भारत अभियान के संचालन के दौरान अनेक तरह की चुनौतियों भी शासन के समक्ष होती हैं। एमएसएमई क्षेत्र के द्वारा भारत के कुल रोजगार का केवल 30 प्रतिशत रोजगार ही प्रदान किया जाता हैं तथा रोजगार में वृद्धि तो हुई हैं किन्तु यह वृद्धि असमान तथा अस्थिर हैं। इसके अतिरिक्त एमएसएमई का जीडीपी में योगदान 29–30 प्रतिशत के आसपास ही स्थिर हैं शोध अवधि में योजना के तहत घोषित ऋण योजनाएं सभी एमएसएमई तक समान रूप से नहीं पहुच पायी हैं।

शोध सुझाव

1. एमएसएमई वित्तीय पहुंच को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल क्रेडिट स्कोरिंग तथा क्लस्टर आधारित ऋण मॉडल अपनाया जाना चाहिए ताकि एमएसएमई का जीडीपी में योगदान 30–35 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सके।
2. रोजगार कुशलता को बढ़ाने के लिए रोजगार उन्मुख कौशल विकास उद्योगों से लिंक प्रशिक्षण के माध्यम से किया जाना चाहिए।
3. कोर सेक्टर में शोध एवं विकास के क्षेत्र में विनियोग तथा स्थानीय पूर्ति श्रृंखला का विकास किया जाना चाहिए ताकि आयात निर्भरता को कम किया जा सके।
4. क्षेत्रीय संतुलन नीति के तहत पिछड़े राज्यों में अलग पीएलआई स्लैब्स का निर्धारण किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. https://www.imf.org, Accessed on 12/11/2025.
2. https://www.commerce.gov.in, Accessed on 23/11/2025.
3. https://dpiit.gov.in, Accessed on 23/12/2025.
4. https://microdata.gov.in, Accessed on 23/12/2025.
5. https://labourbureau.gov.in, Accessed on 23/12/2025.
6. https://www.indiabudget.gov.in, Accessed on 23/01/2026.

****